International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.405-406

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

डॉ. माधवी झा*

प्रस्तावना

यदयपि हमारे समाज में वैदिक काल से ही महिलाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। निसंदेह उनकी भागीदारी को संकुचित अव य किया गया था। मध्य काल के उनके अस्तिव को नकारा गया, समाज में उन्हें दूसरे दर्जे का स्थान प्रदान किया गया। बहुत सी सामाजिक कुरीतियों ने औरतों की अस्मिता को प्रभावित किया। आधुनिक युग के प्रारंभ के साथ एक नई आ ाा की किरण समाज–सुधारकों द्वारा प्रज्वलित की गई, जिसने महिलाअें को समाज के नए पायदान पर लाकर खड़ा कर दिया। अब उनकी भागीदारी समाज में परिवर्त्तन तथा समाज को नई दि ाा दिखाने के लिए आव यक हो गई।

1857 की क्रांति के बाद हिंदुस्तान की धरती पर हो रहे परिवर्त्तनों ने जहां एक ओर नवजागरण की जमीन तैयार की वही विभिन्न सुधार आंदोलनों और आधुनिक मूल्यों की रो ानी में रूदिवादी मूल्य टूट रहे थे, हिंदू समाज के बंधन ढीले पड़ रहे थे और स्त्रीयों की दुनिया चूल्हे चौके से बाहर नए आका ा में विस्तार पा रही थी। इस परिवर्त्तन में अहम भूमिका निभाने वाले महापुरूशें (राजा राम मोहन रॉय, ज्योतिबा फुले, ई वर चंद्र विद्यासागर आदि) का जिक्र भी जरूरी हो जाता है, क्योंकि उनके प्रयास के बिना महिलाओं का वर्त्तमान स्वरूप देख पाना संभव नहीं था। महिलाओं के साहस को धार देने और उसे सीमित वर्ग से जनसाधारण तक पहुंचाने का श्रेय गांधीजी को ही जाता है।

कांग्रेस के गठन के बाद पहली बार सार्वजनिक रूप से स्त्रियां बड़ी संख्या में सामने आइ, बंगाल के विभाजन के विराध में 1905 में। महिलाअें ने विभाजन के विराध में सभा की, वंदे मातरम के नारे लगाए, इतना ही नहीं आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के लिए अपने गहने तक दान कर दिए। स्त्रियां बड़े पैमाने पर अपने घरों से बाहर निकली और राश्ट्रीय परिद्द य का हिस्सा बनी। 1916 में होम रूल लीग और 1917 में एनी बेसेण्ट ने विमेंस इण्डियन असोसिए ान की भ्ारूआर की

मद्रास में संख्या में स्त्रियों के मार्च को एनी बेसेण्ट ने सराहा और कहा कि जब पुरूश हार मान कर बैठ चुके तब स्त्रियों ने आगे आकर मोर्चा संभाला है। 1925 में सरोजिनी नायडू कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष चुनी गई। अपने भाश्ण में उन्होंने यह कहा कि सालों में अब तक जो स्त्री को, पालना झुलाती थी और लोरिया गाती थी, उसे यह जिम्मेदारी सौंपकर आपने अपने गिरते हुए पुरूश्त्व का कुछ प्रायि चत किया है और सत्री को, जिसकी कोख से सभ्याता की भ्ारूआत हुई, उसे जनता के दुनियावी और आध्यात्मिक विकास में अपना साथी और साझीदार स्वीकार किया है।

गाँधी द्वारा राश्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व संभालने के साथ ही राश्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। इसका कारण यह था कि गांधी जी की सत्य अहिंसा और सत्याग्रह की नीति महिलाओं के स्वभाव के अनुकूल थी। असहयोग आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं के एक समूह ने खादी वस्त्रों की बिक्री कर सरकार की अवज्ञा की थी। 1929 ई० में उर्मिला देवी की अध्यक्षता में नारी सत्याग्रह समिति का गठन किया गया। मद्रास के पूर्वी गोदावरी जिले में दुबरी सुबासम नामक महिला ने ''देव सेविका'' नामक स्त्री संध की स्थापना की थी। गांधी के आंदोलन में इसमें सक्रिय भूमिका निभाई।

6 समाजशास्त्र विभाग (इतिहास), नालंदा कोलेजिएट 2 स्कूल, बिहार शरीफ, बिहार।

लतिका घोश ने साइमन कमी ान के विरोध में महिलाओं की एक रैली का आयोजन किया। असने सुभाश चंद्र बोस की सलाह पर महिला राष्ट्रीय संघ की स्थापना की। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महिलाअें ने बड़ी संख्या में भाग लिया। धरसना नामक स्थल पर जब अब्बास तैयबजी की गिरफ्तारी हो गई, तब आंदोलन का नेतृत्व सरोजिनी नायडू ने संभाला।

महिलाओं की भूमिका सिर्फ इन्हीं आंदोलनों तक ही सीमित नहीं रहीं, क्रांतिकारी आंदोलनों में भी इनकी भागीदारी उल्लेखनीय है। कल्पना दा, प्रीति लता वाडेकर एंव सुनीति चौधरी आदि नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है।

1942 के आंदोलन में उशा मेहता ने गुप्त रेडियों का संचालन का आंदोलनकारियों का मार्गद ान किया। इस आंदोलन के दौरान गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद पत्नी कस्तूरबा ने आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। इंदिरा गांधी ने इस आंदोलन के दौरान बानरी सेना की गठन किया था।

इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों प्रकार से महिलाओं की भूमिका प्र ांसनीय मानी जा सकती है। नेहरू जी ने भी अपनी ''पुस्तक भारत एक खोज'' में एक फ्रांसीसी लेखक के भाब्दों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि ''यदि किसी समाज के विकास का अनुमान लगाना है तो उस समाज में महिलाओं की भागीदारी को देखना आव यक है।'' और हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाअें की भूमिका ने समाज की उन्नति की ओर अग्रसर किया है।

References

- Freedom Struggle – Bipan Chandra, Amales Tripathi
- India's struggle for Independence (1857-1947) – Bipan Chandra, Mridula Mukherjee
- Discovery of India – J.L. Nehru
- History books of NCERT -

❖◆❖